सफ़दर हाशमी
सारे मौसम अच्छे
तस्वीरें: नीलिमां शेख़

सारे मौसम अच्छे

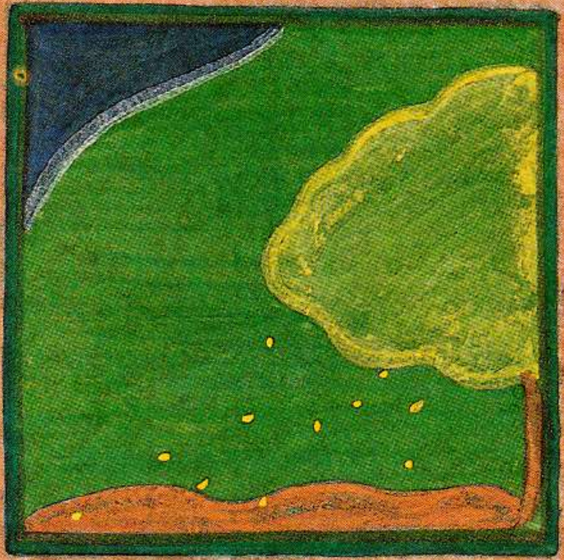

कविताएं
सफ़दर हाश्मी

तस्वीरें
नीलिमा शेख़

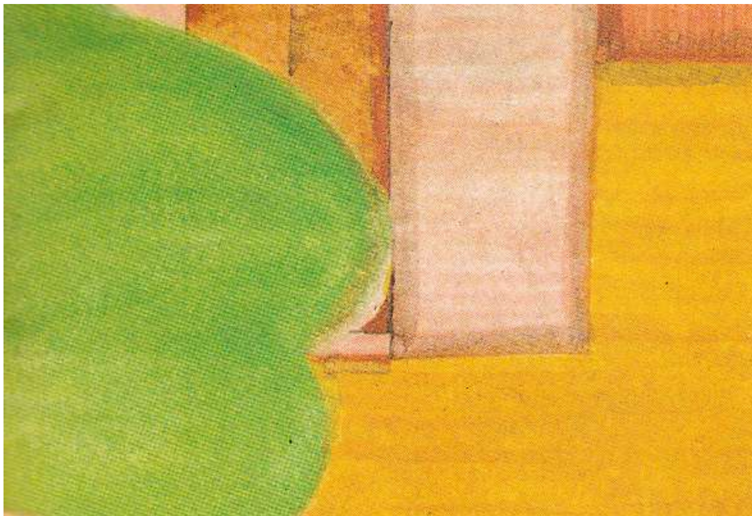

पहली बारिश

रस्सी पर लटके कपड़ों को
सुखा रही थी धूप
चाची पिछले आंगन में जा
फटक रही थी सूप।
गइया पीपल की छैयां में
चबा रही थी घास
झबरू कुत्ता आंखें मूंदे
लेटा उसके पास।

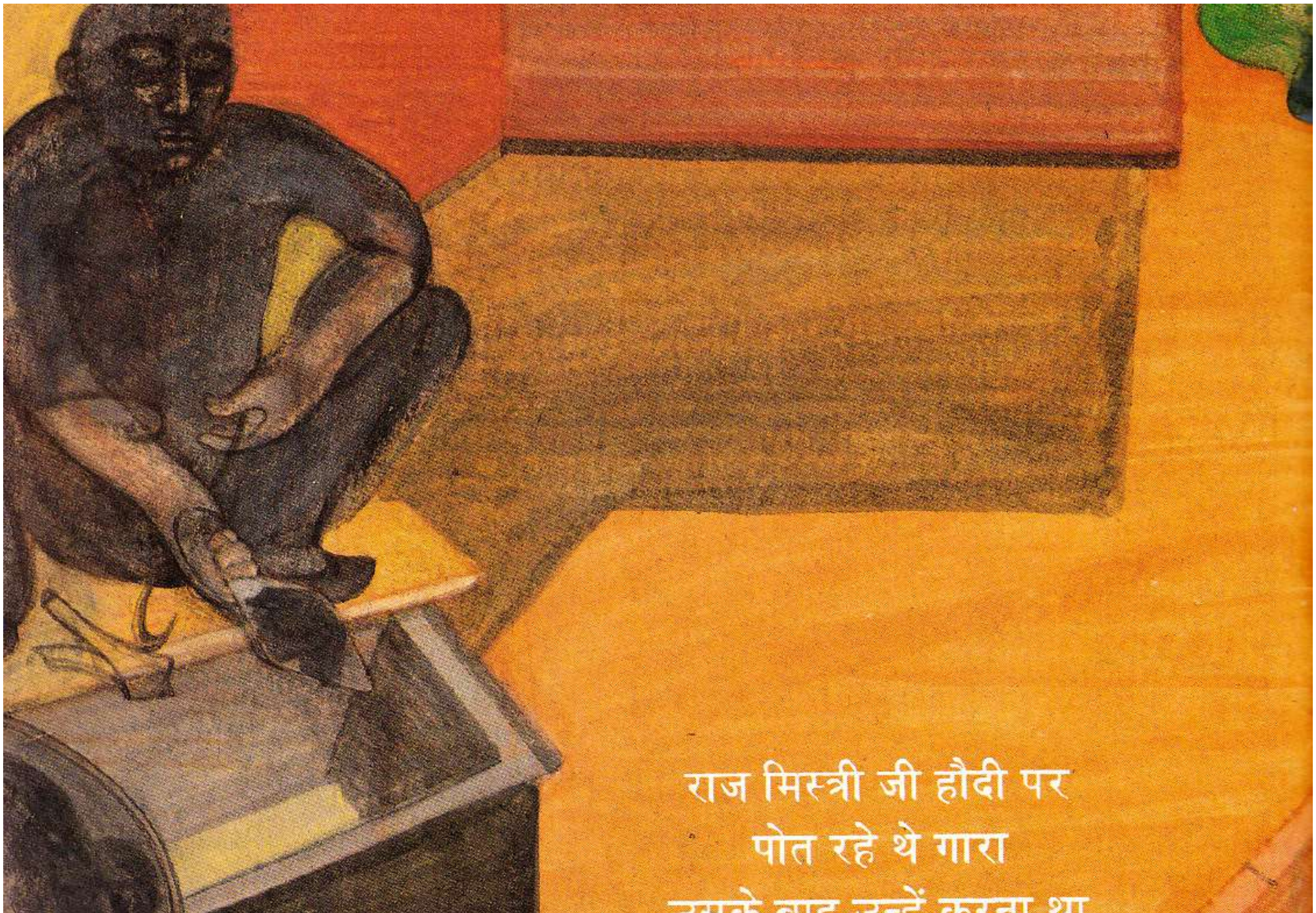
राज मिस्त्री जी हौदी पर
पोत रहे थे गारा
उसके बाद उन्हें करना था
छज्जा ठीक हमारा।

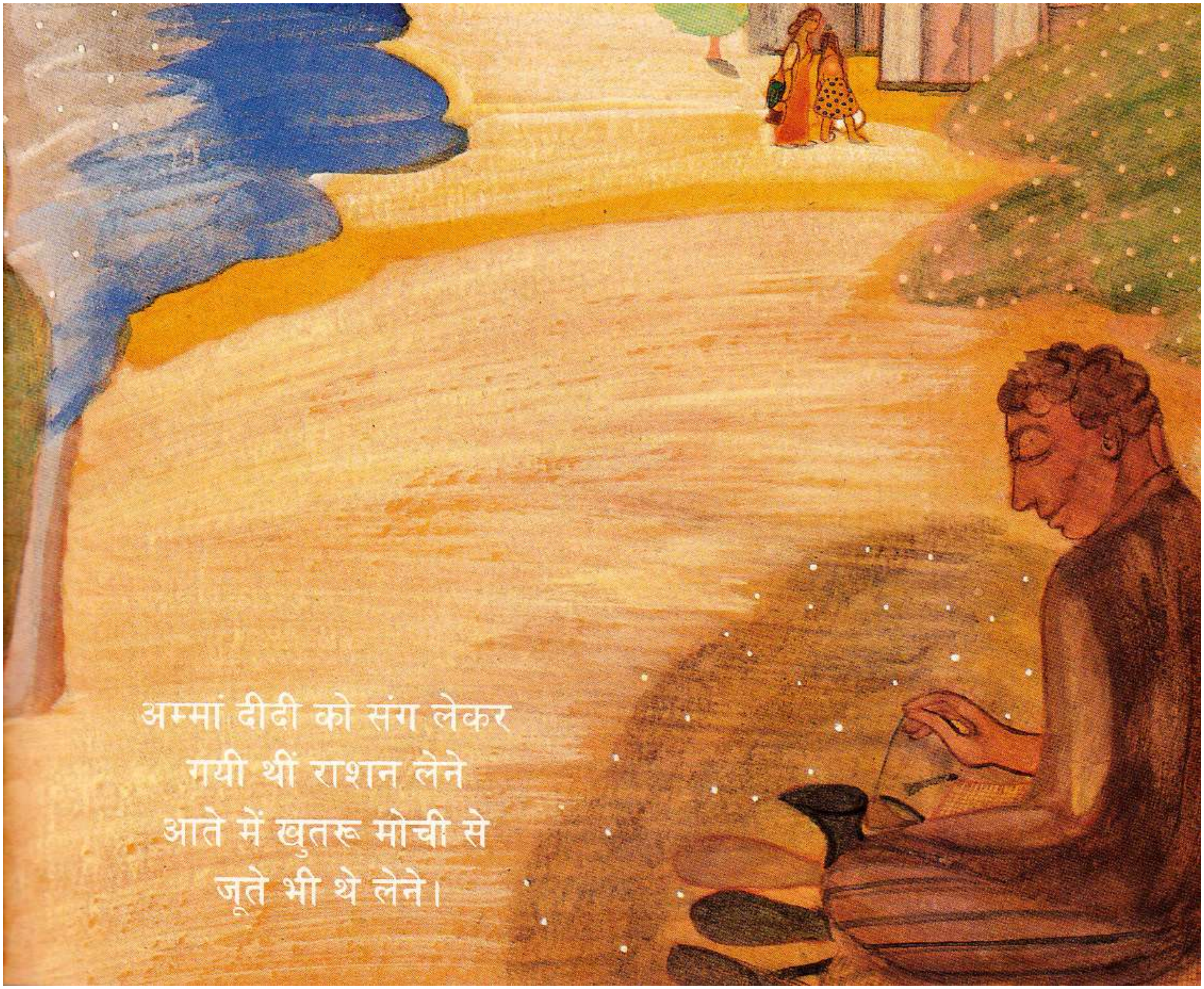

अम्मां दीदी को संग लेकर
गयी थीं राशन लेने
आते में खुतरू मोची से
जूते भी थे लेने।

तभी अचानक आसमान पर
काले बादल आये
भीगी हवा के झोंके अपने
पीछे पीछे लाये।

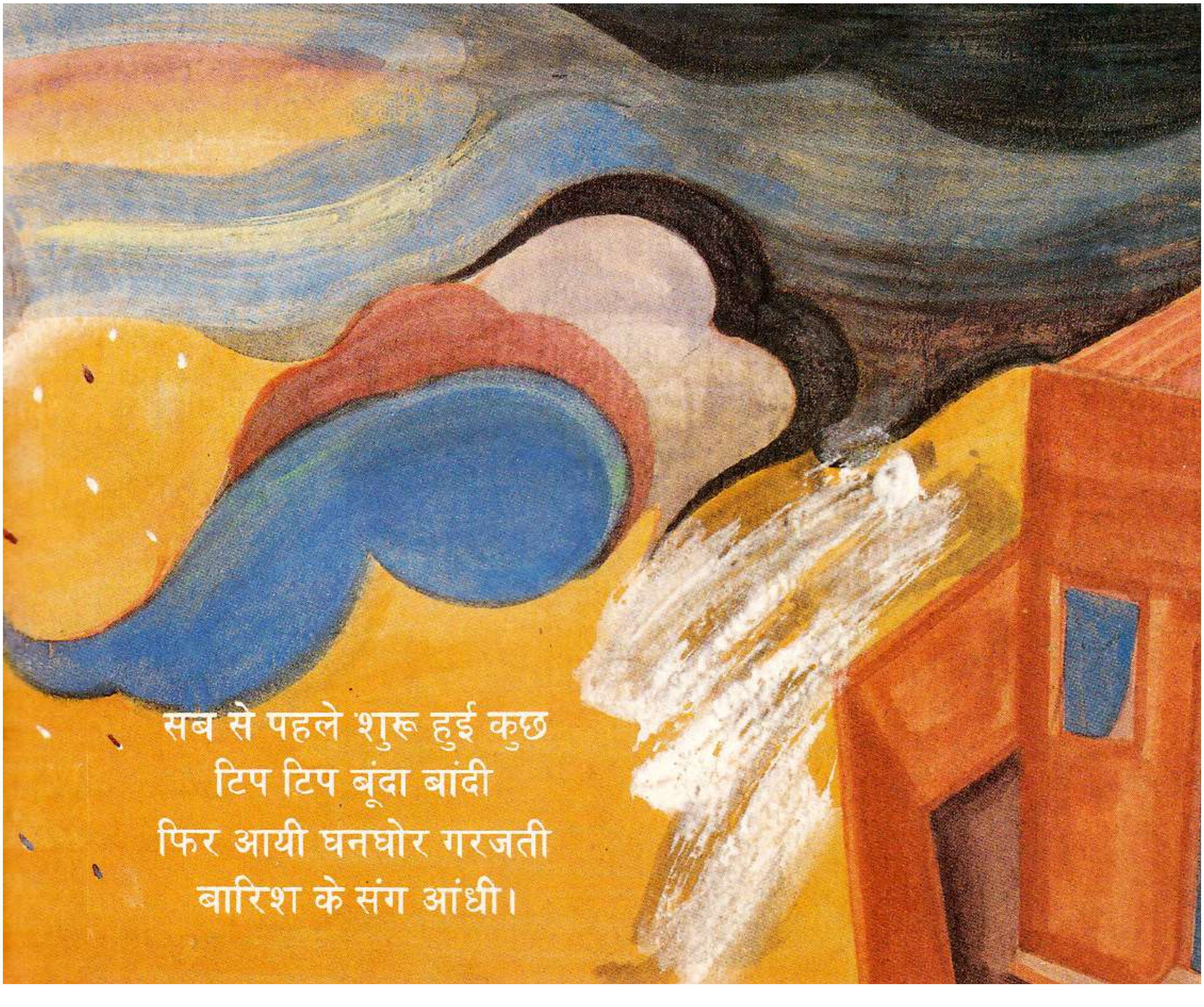
सब से पहले शुरू हुई कुछ
टिप टिप बूंदा बांदी
फिर आयी घनघोर गरजती
बारिश के संग आंधी।

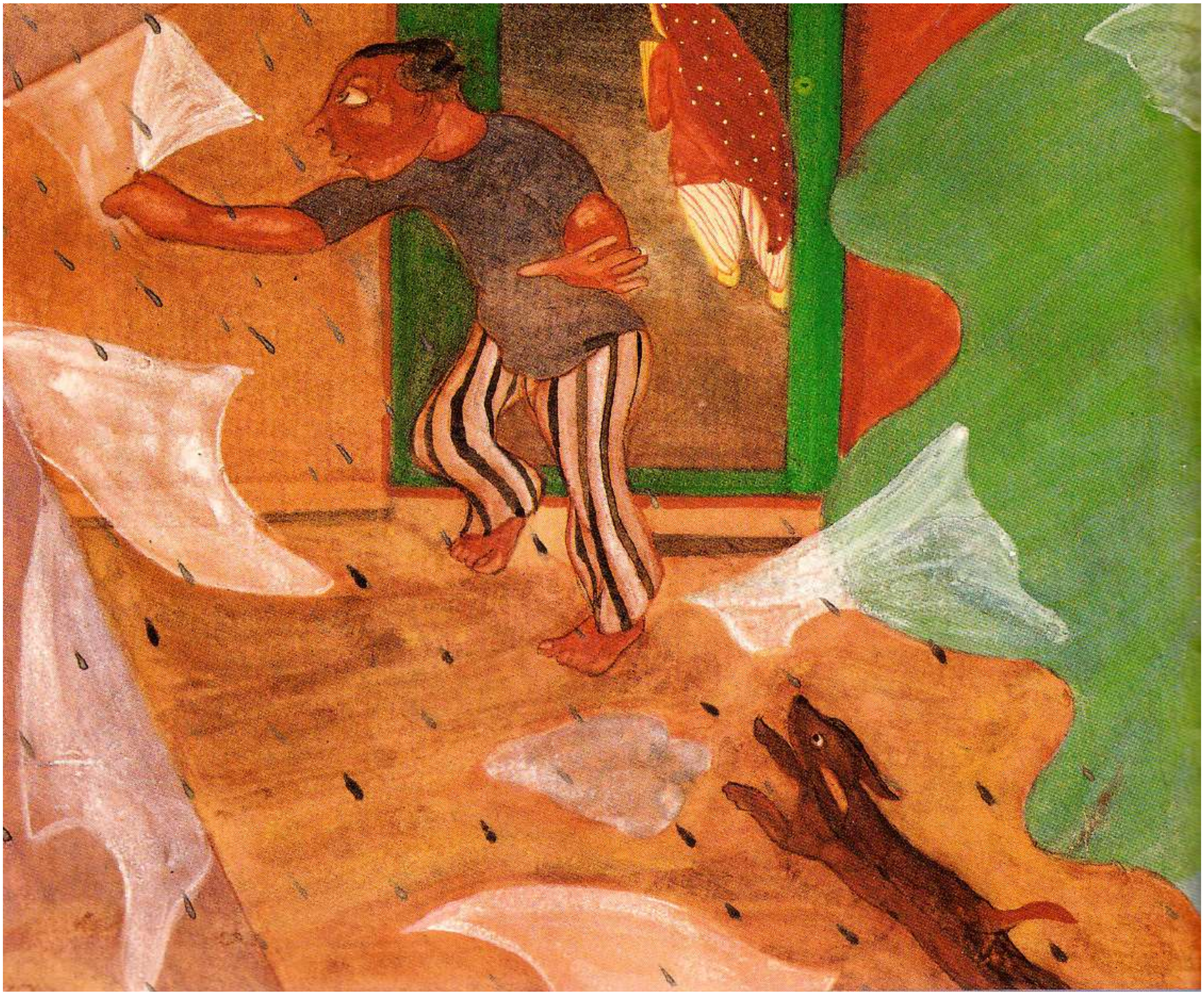

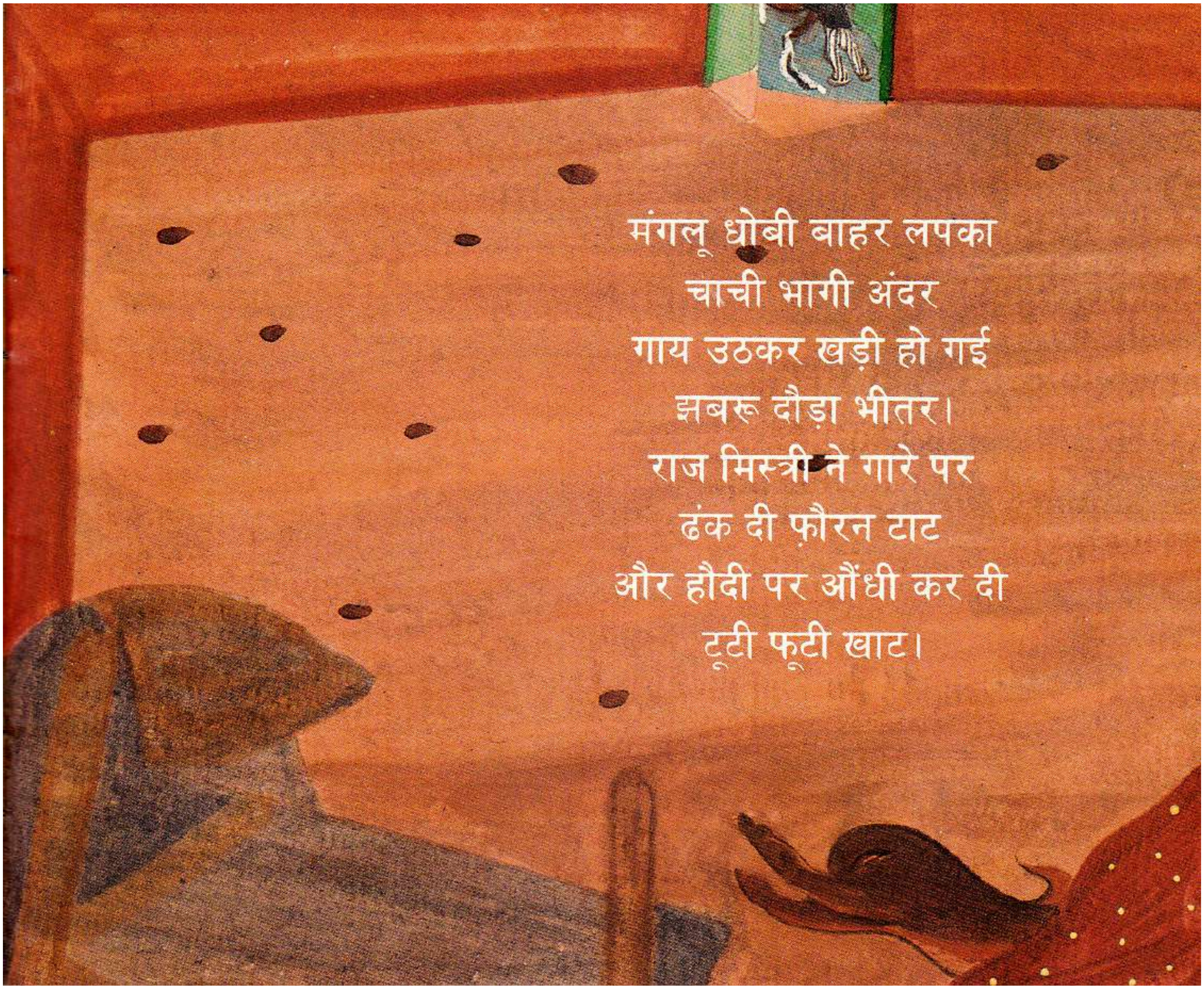

मंगलू धोबी बाहर लपका
चाची भागी अंदर
गाय उठकर खड़ी हो गई
झबरू दौड़ा भीतर।
राज मिस्त्री ने गारे पर
ढंक दी फ़ौरन टाट
और हौदी पर औंधी कर दी
टूटी फूटी खाट।

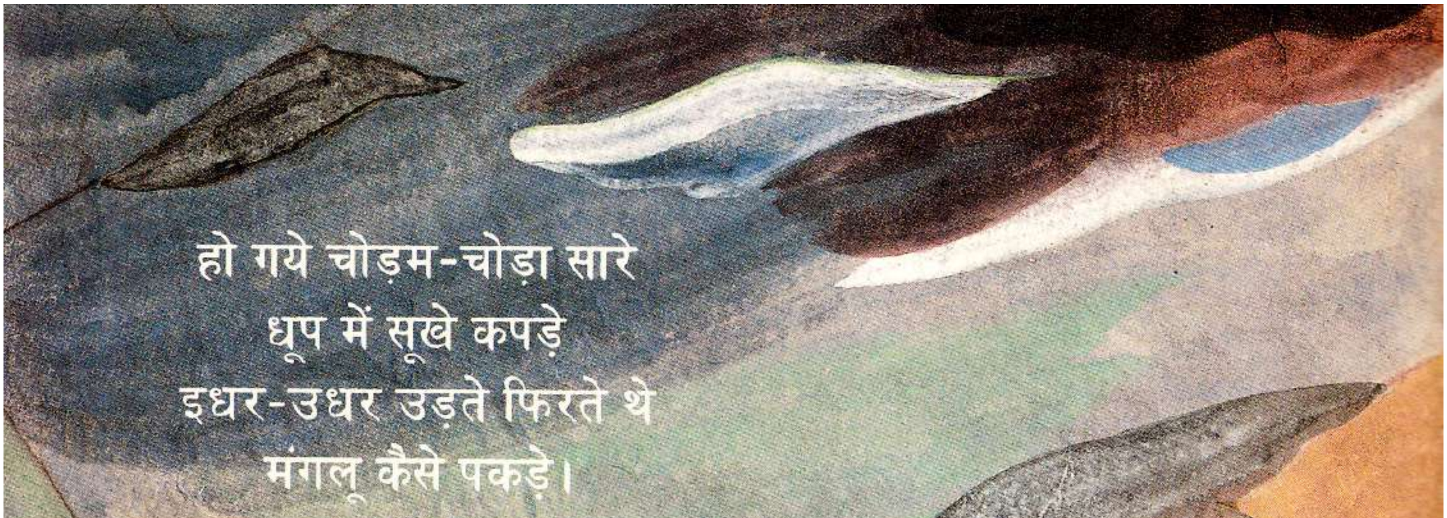
हो गये चोड़म-चोड़ा सारे
धूप में सूखे कपड़े
इधर-उधर उड़ते फिरते थे
मंगलू कैसे पकड़े।

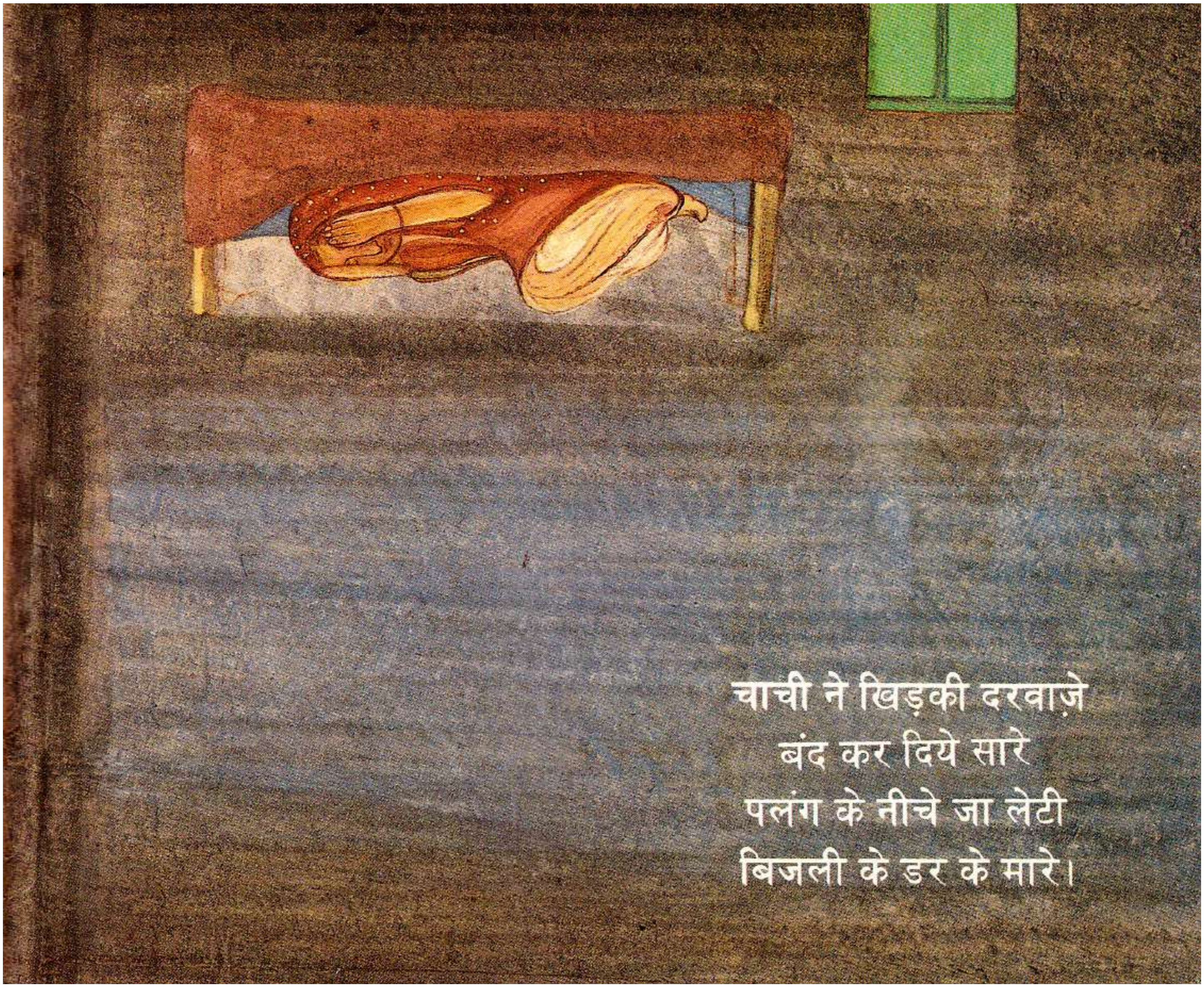
चाची ने खिड़की दरवाज़े
बंद कर दिये सारे
पलंग के नीचे जा लेटी
बिजली के डर के मारे।

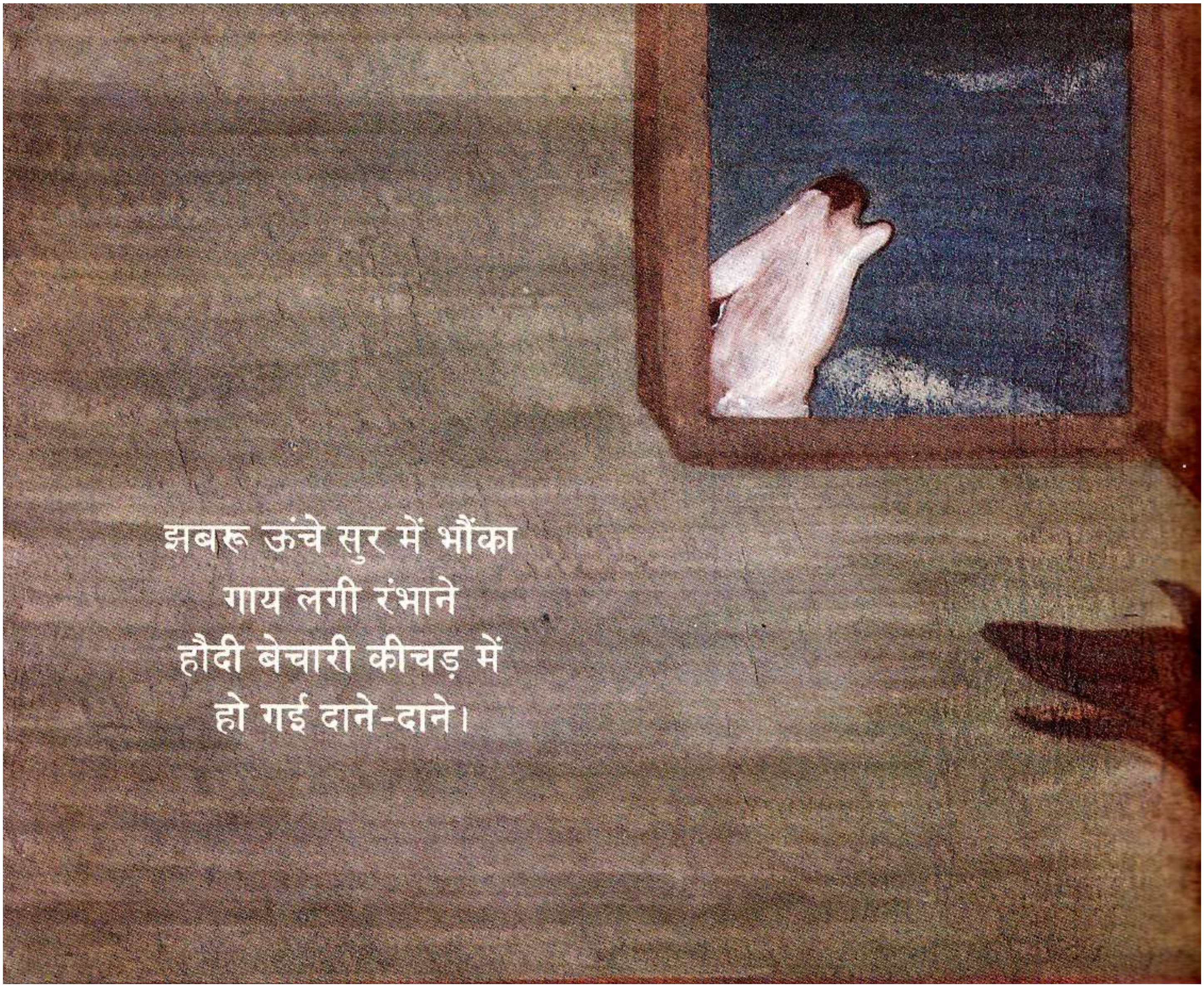
झबरू ऊंचे सुर में भौंका
गाय लगी रंभाने
हौदी बेचारी कीचड़ में
हो गई दाने-दाने।

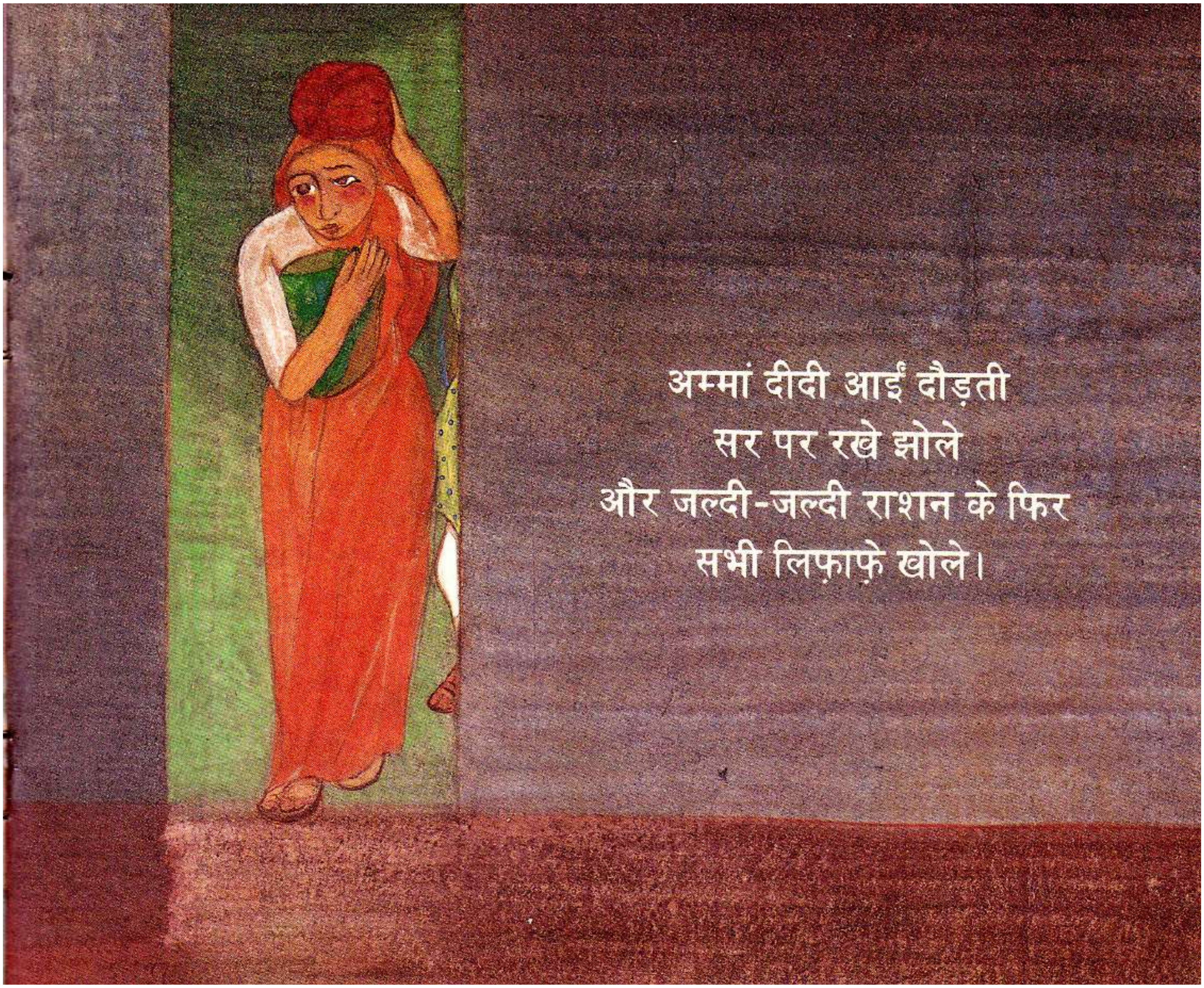

अम्मा दीदी आईं दौड़ती
सर पर रखे झोले
और जल्दी-जल्दी राशन के फिर
सभी लिफ़ाफ़े खोले।

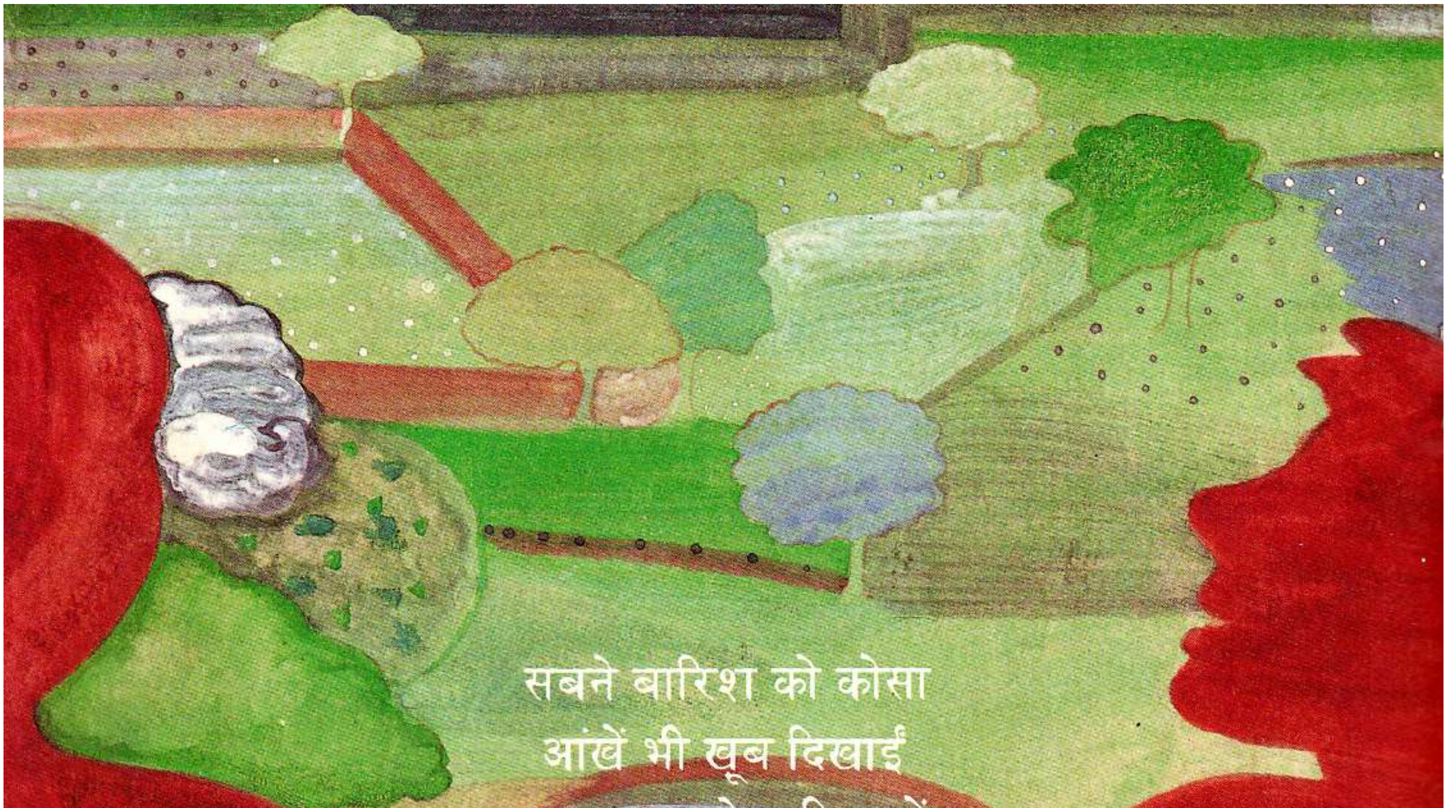
सबने बारिश को कोसा
आंखें भी खूब दिखाईं
पर हम नाचे बारिश में
और मौजें ढेर मनायीं।

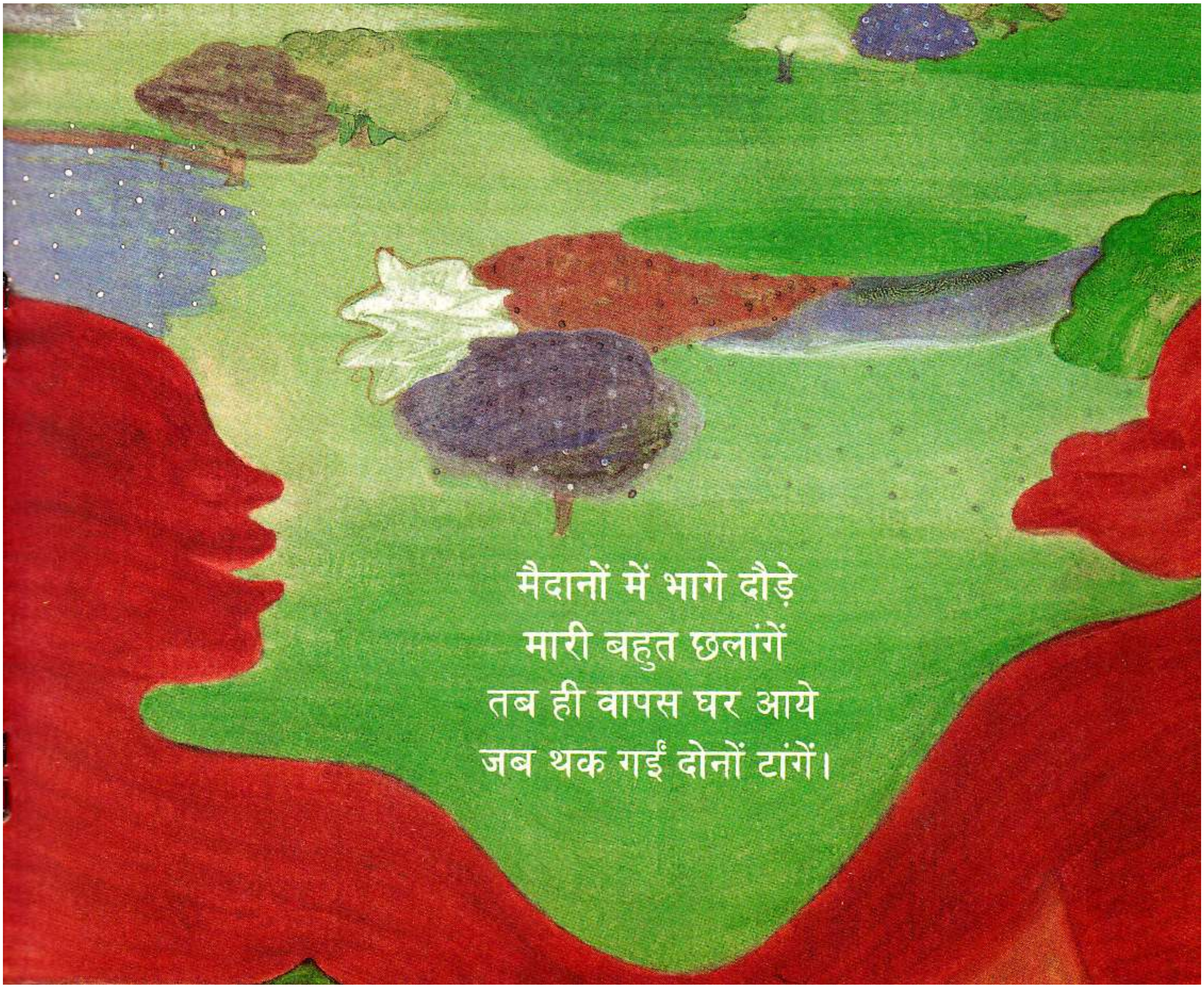
मैदानों में भागे दौड़े
मारी बहुत छलांगें
तब ही वापस घर आये
जब थक गईं दोनों टांगें।

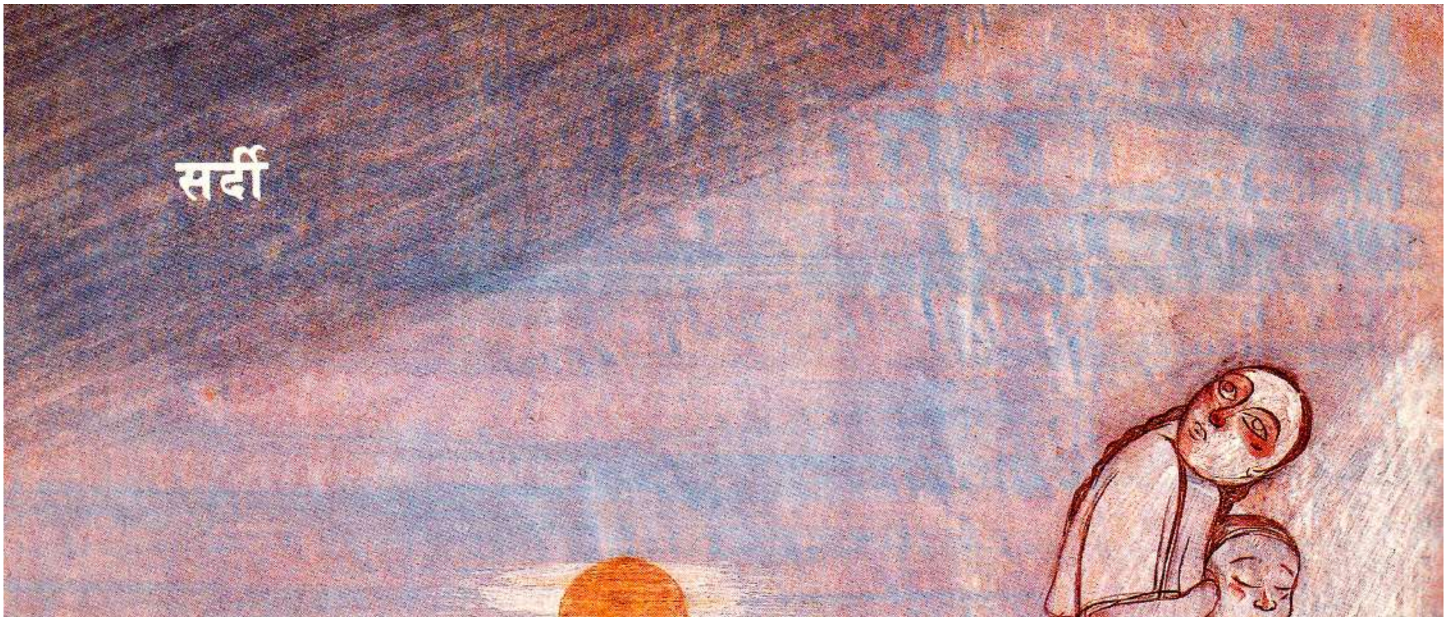
सर्दी

सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई।
सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले, चाहे तगड़े।
नाक सभी की लाल हो गई
सुकड़ी सबकी चाल हो गई।

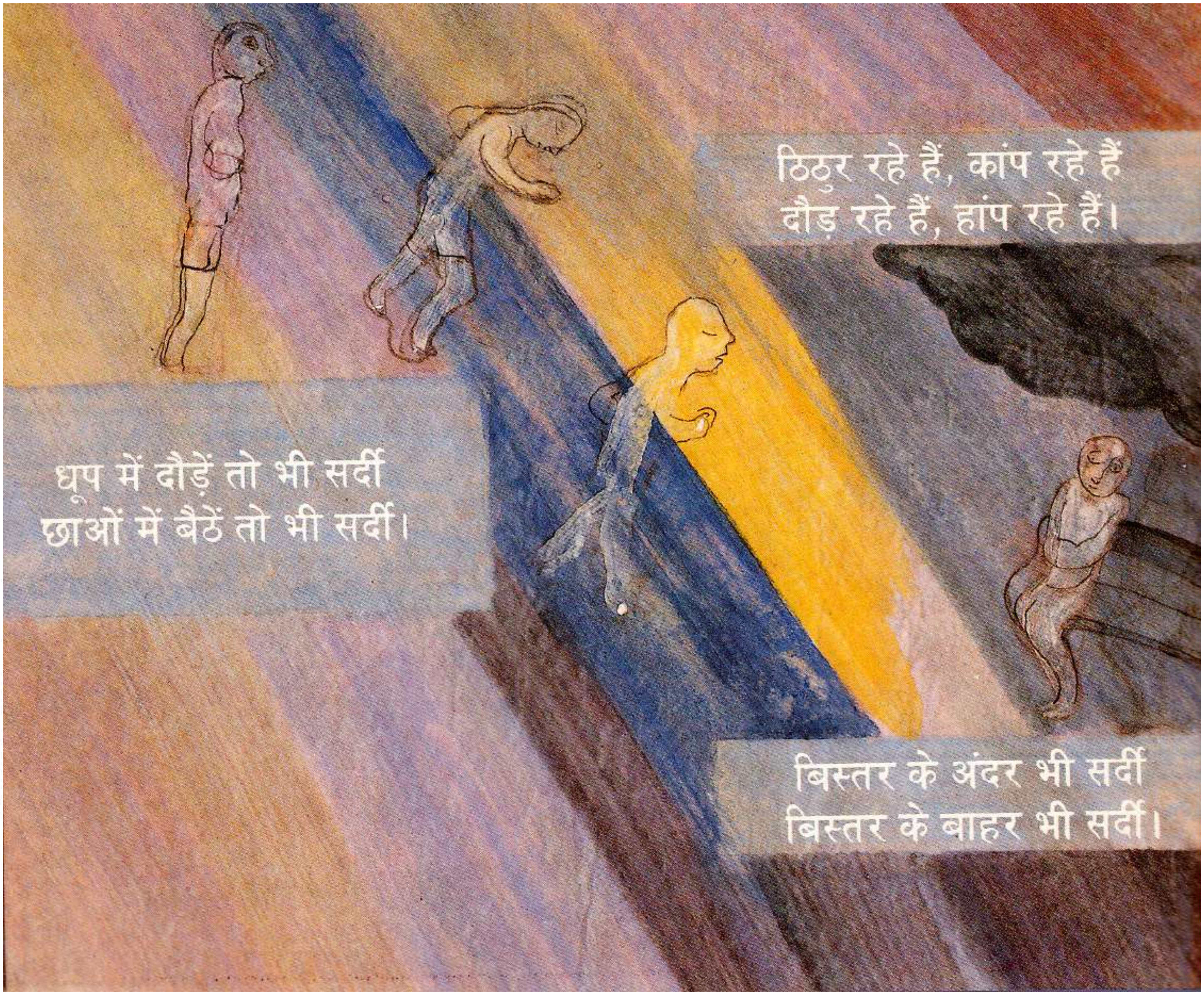
ठिठुर रहे हैं, कांप रहे हैं
दौड़ रहे हैं, हांप रहे हैं।
धूप में दौड़ें तो भी सर्दी
छाओं में बैठें तो भी सर्दी।
बिस्तर के अंदर भी सर्दी
बिस्तर के बाहर भी सर्दी।

बाहर सर्दी, घर में सर्दी
पैर में सर्दी, सर में सर्दी।
इतनी सर्दी किसने करदी
अण्डे की जम जाये ज़र्दी।
सारे बदन में ठिठुरन भरदी
जाड़ा है मौसम बेदर्दी।

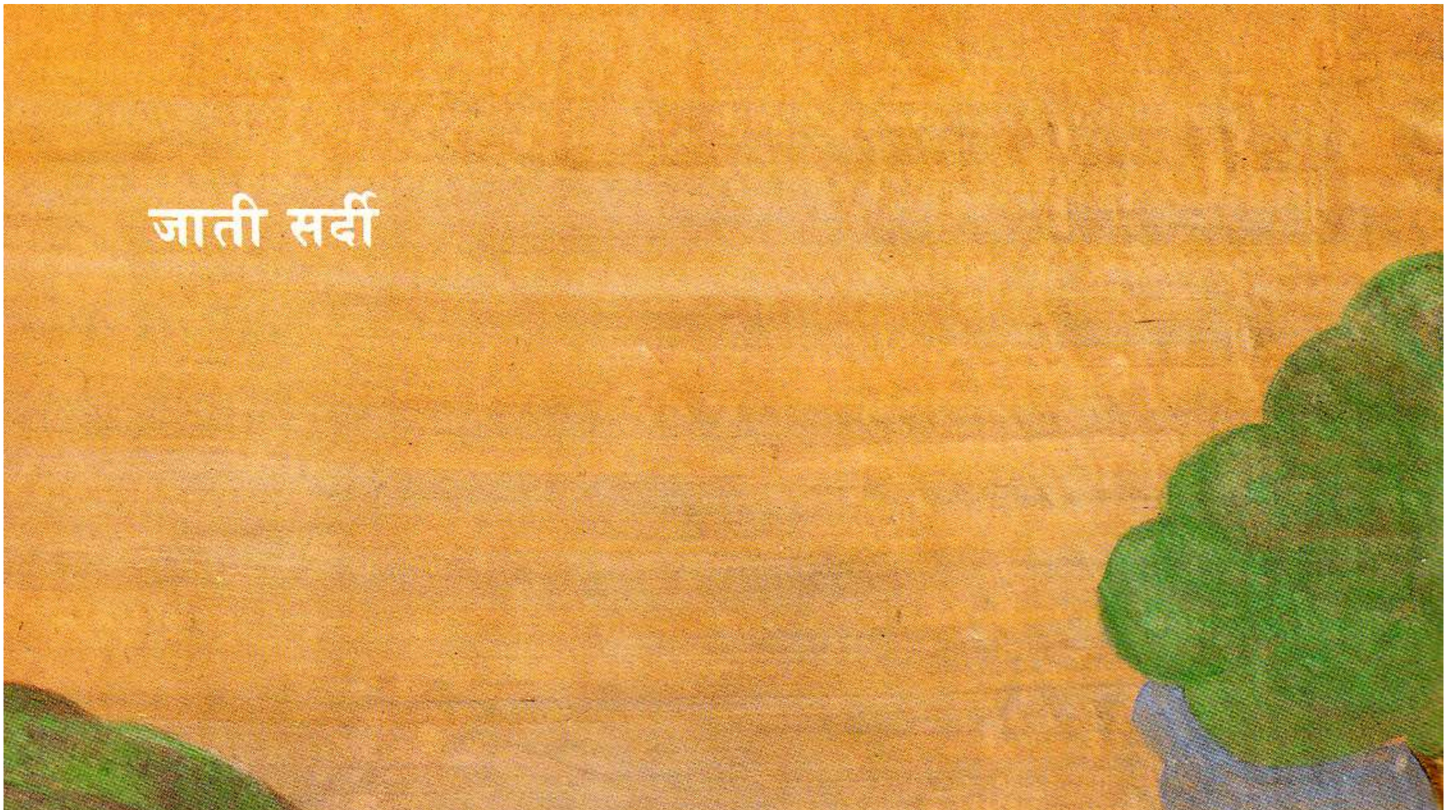
जाती सर्दी

घर के बाहर खिसक रही है
धीरे-धीरे सर्दी
आसमान भी खोल रहा है
घिसी सलेटी वर्दी।

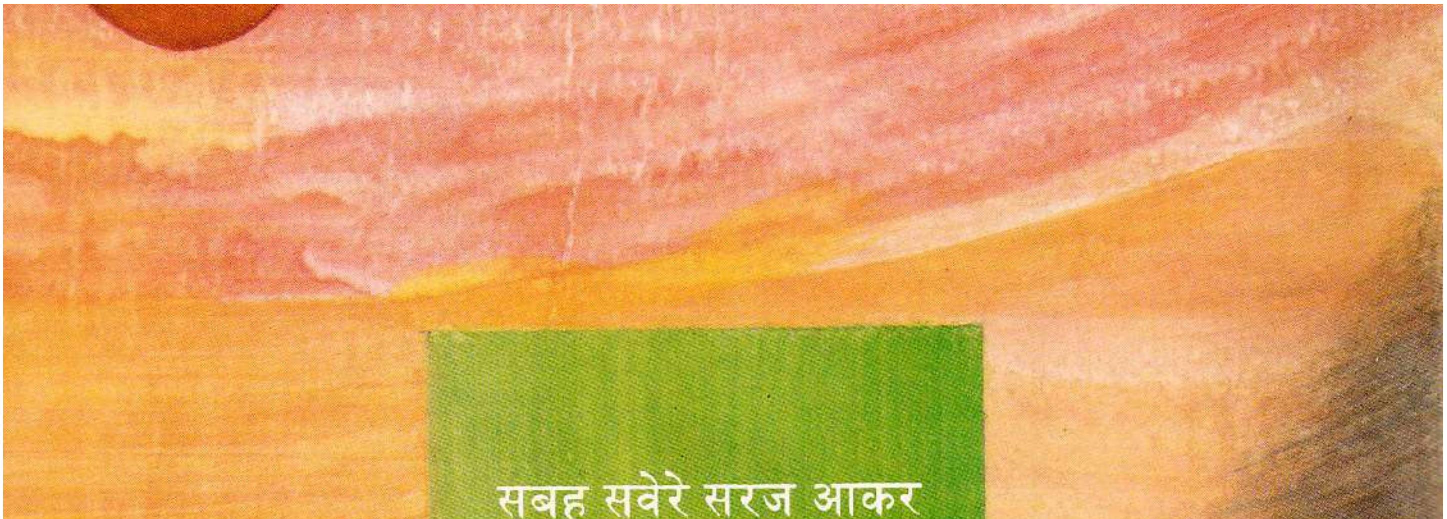

सुबह सवेरे सूरज आकर
धूप की चादर खोले
जाड़ा पंजों के बल चलता
अपनी राह को होले।

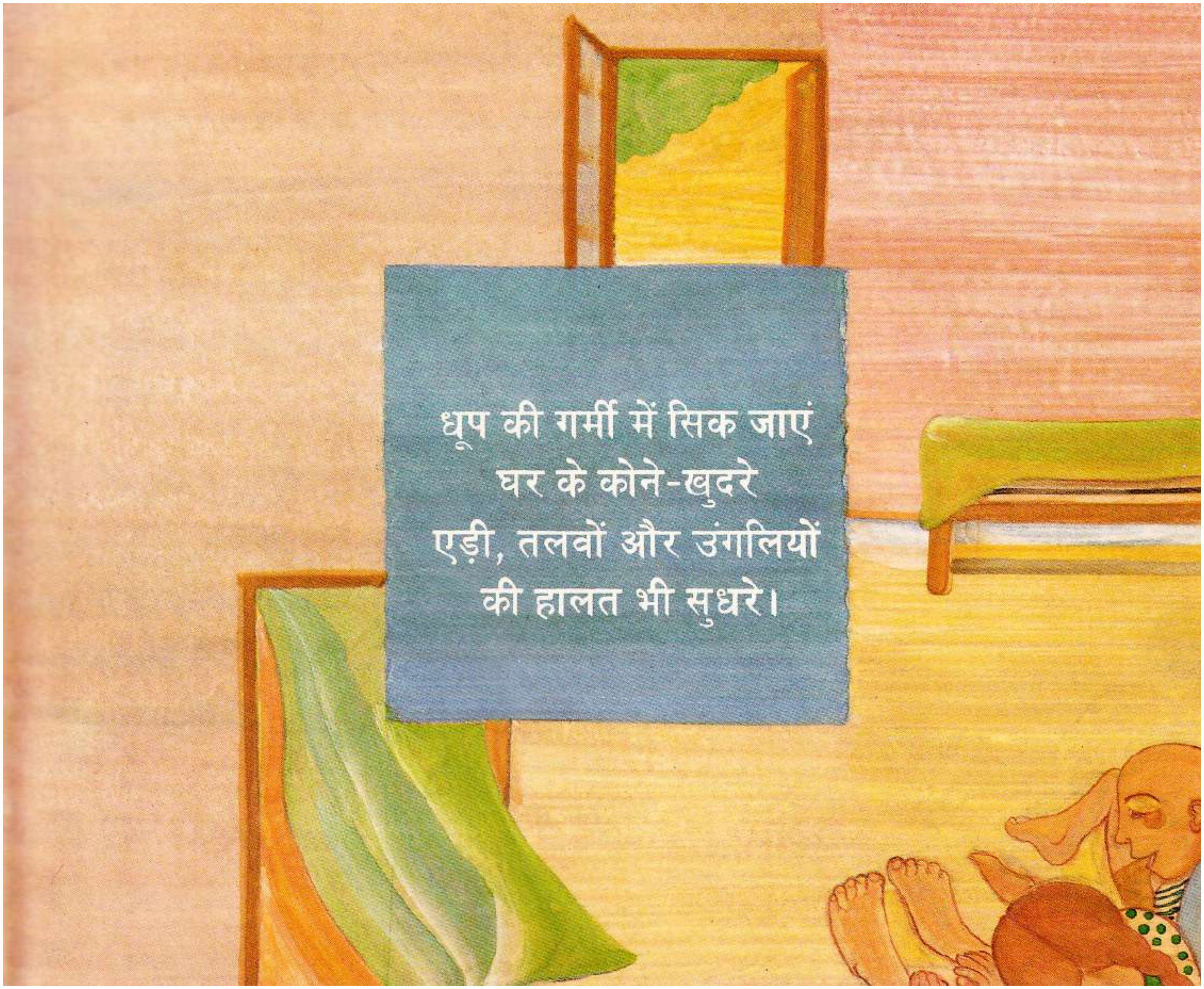
धूप की गर्मी में सिक जाएं
घर के कोने-खुदरे
एड़ी, तलवों और उंगलियों
की हालत भी सुधरे।

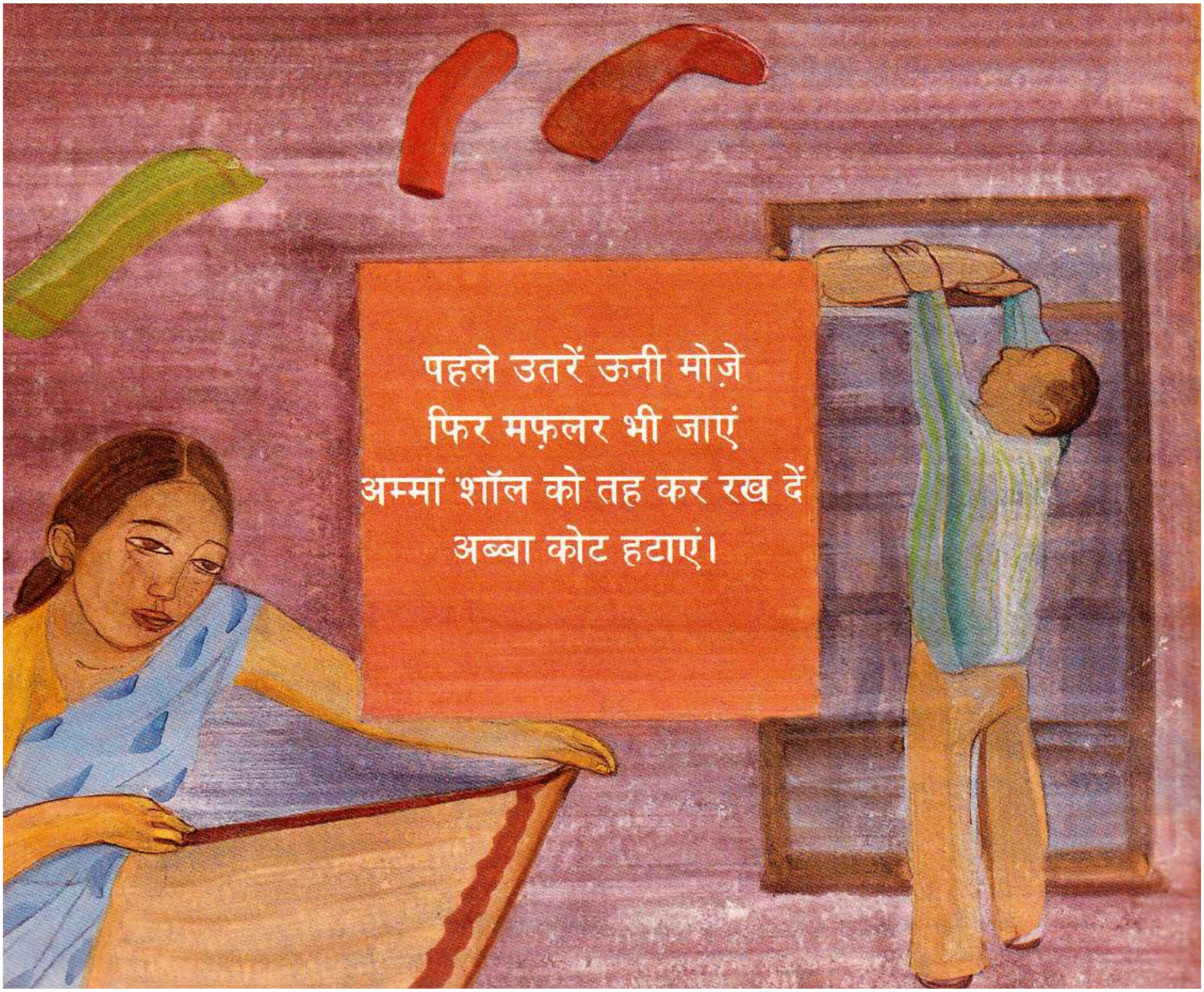
पहले उतरें ऊनी मोज़े
फिर मफ़लर भी जाएं
अम्मां शॉल को तह कर रख दें
अब्बा कोट हटाएं।

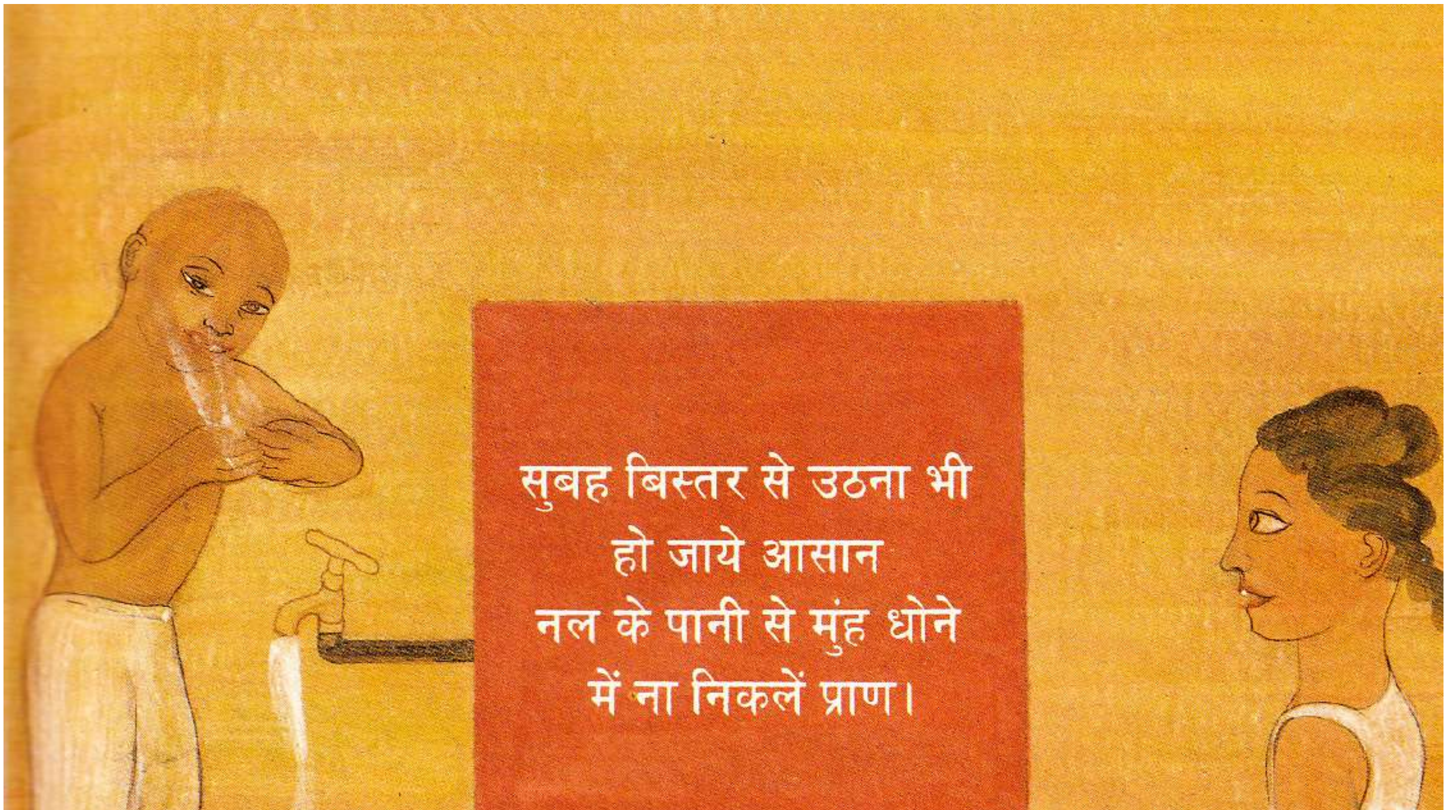
सुबह बिस्तर से उठना भी
हो जाये आसान
नल के पानी से मुंह धोने
में ना निकलें प्राण।

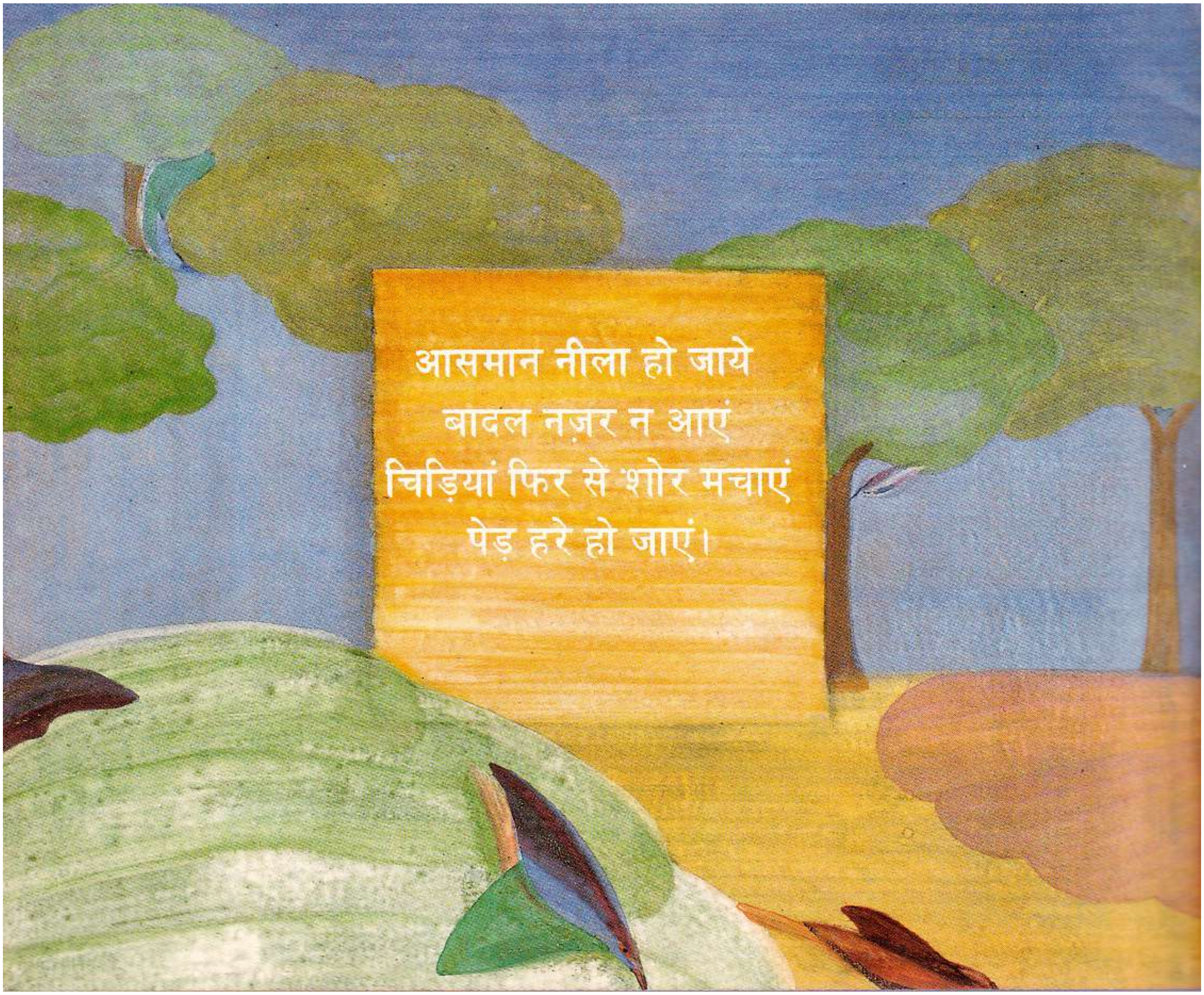
आसमान नीला हो जाये
बादल नज़र न आएं
चिड़ियां फिर से शोर मचाएं
पेड़ हरे हो जाएं।

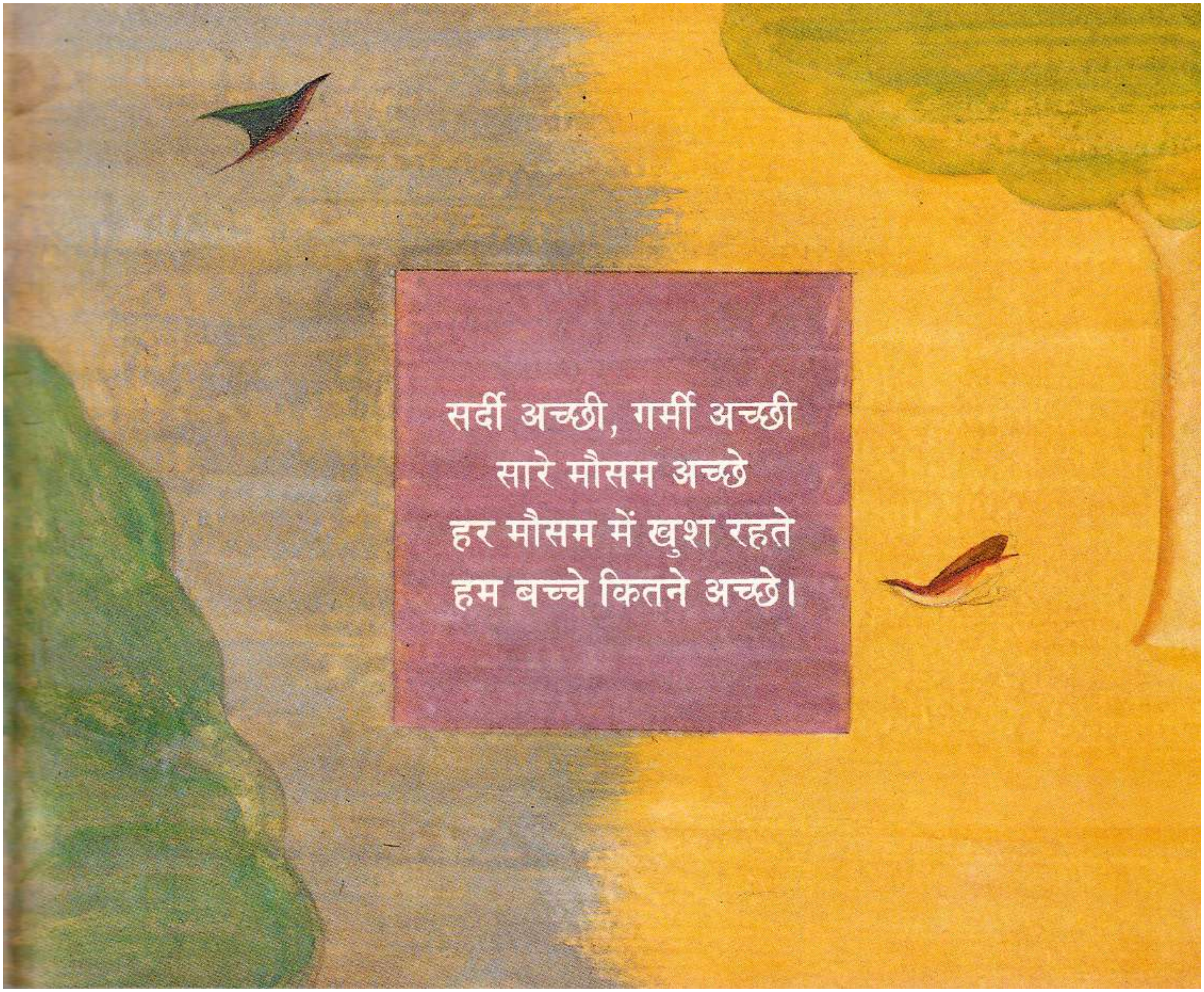
सर्दी अच्छी, गर्मी अच्छी
सारे मौसम अच्छे
हर मौसम में खुश रहते
हम बच्चे कितने अच्छे।

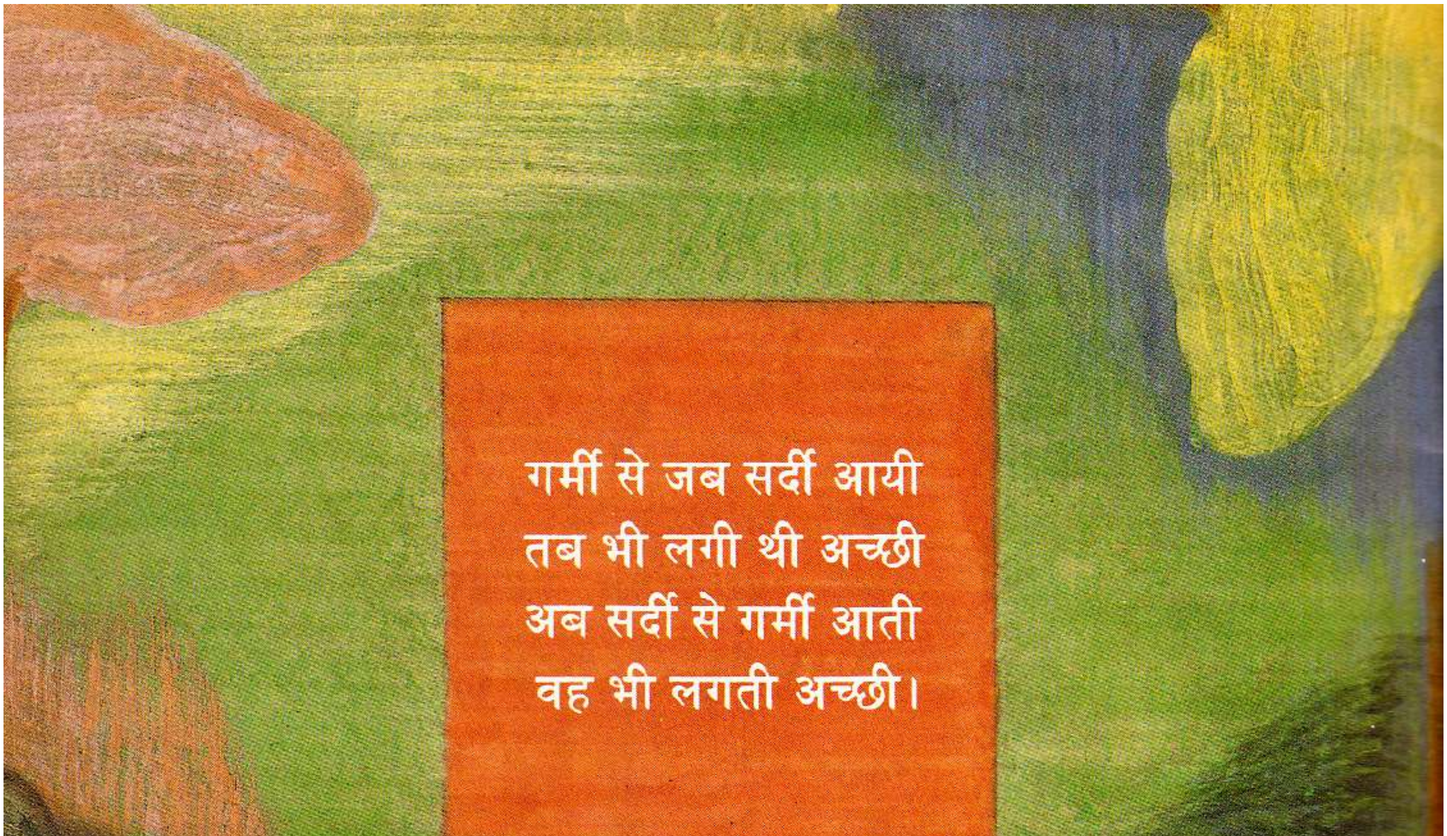
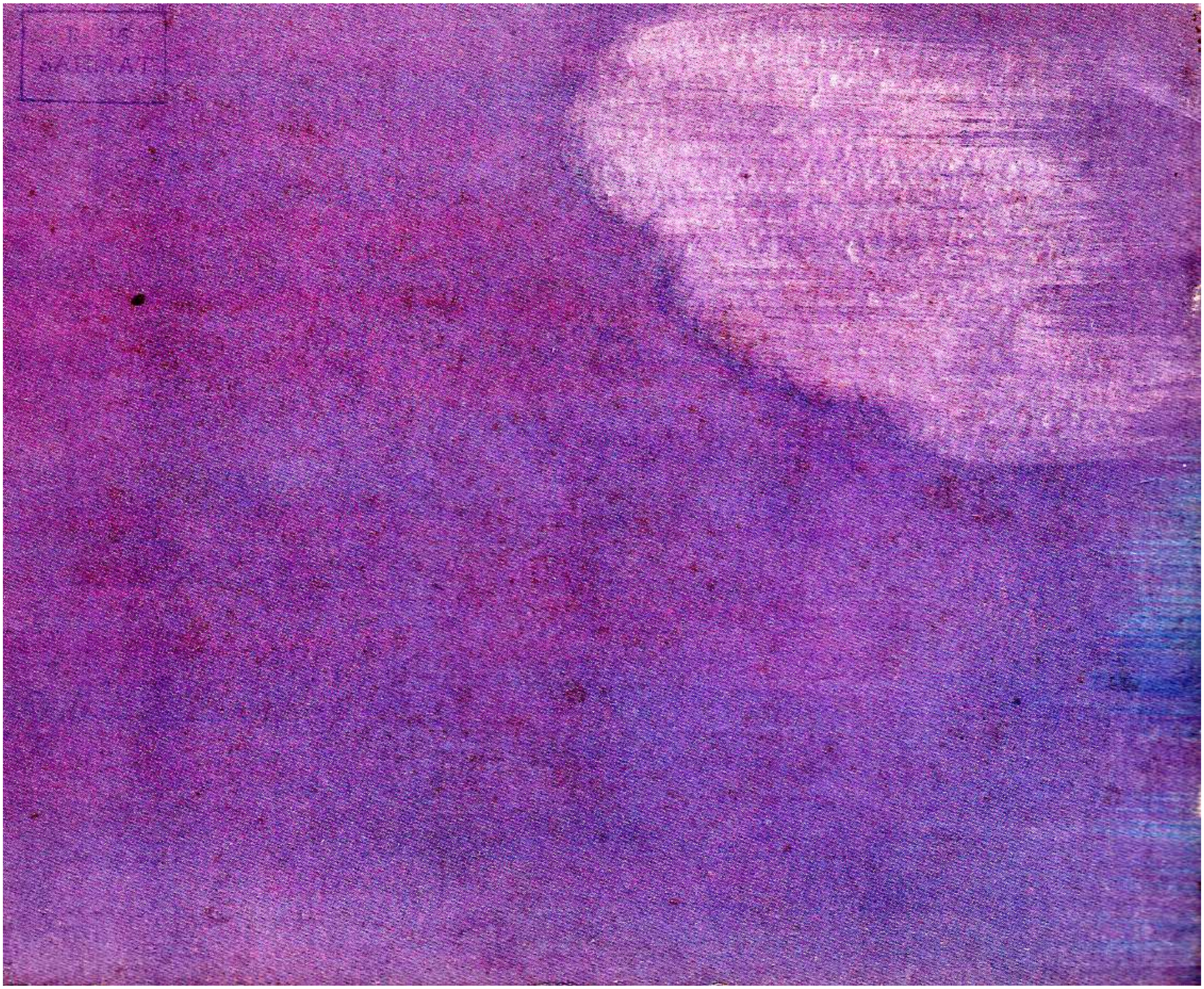
गर्मी से जब सर्दी आयी
तब भी लगी थी अच्छी
अब सर्दी से गर्मी आती
वह भी लगती अच्छी।